

21वीं सदी में हिंदी भाषा का आत्मसंघर्ष: स्वरूप, चुनौतियाँ एवं दिशाएँ

¹प्रज्ञा ओझा, ²सत्य नरायन यादव

¹सहायक प्राध्यापिका, (हिंदी विभाग), ², सहायक प्राध्यापक, (शिक्षा विभाग)

¹हरिश्चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 221001

²एस. जी. बी. वाई. एस. एस. महाविद्यालय एवं अनुसन्धान केंद्र, बोरावां (खरगोन), म. प्र. 451228

Article Received: 07 September 2026

*Corresponding Author: सत्य नरायन यादव

Article Revised: 27 September 2026

सहायक प्राध्यापक, (शिक्षा विभाग) एस. जी. बी. वाई. एस. एस. महाविद्यालय एवं

Published on: 17 October 2026

अनुसन्धान केंद्र, बोरावां (खरगोन), म. प्र. 451228

DOI: <https://doi-doi.org/101555/ijrpa.5204>

सारांश

21वीं सदी में भूमंडलीकरण (Globalization), सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) और बाजारवाद (Consumerism) के अभूतपूर्व प्रभाव ने विश्व भर की भाषाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक ढांचों को गहराई से प्रभावित किया है। इस परिवर्तनकारी दौर में हिंदी केवल अभिव्यक्ति और लोक-संवाद का माध्यम मात्र न रहकर एक जटिल एवं बहुआयामी आत्मसंघर्ष के दौर से गुजर रही है। एक ओर जहाँ जनसांख्यिकी और बोलचाल के धरातल पर हिंदी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली शीर्ष भाषाओं में शामिल है और स्मार्टफोन, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया जैसी डिजिटल क्रांतियों के कारण इसके उपयोगकर्ताओं तथा कंटेंट के परिमाण में ऐतिहासिक उछाल आया है; वहीं दूसरी ओर यह भाषा वैश्विक प्रभुत्व वाली भाषा अंग्रेजी के समक्ष उच्च शिक्षा, मौलिक अनुसंधान, तकनीक, न्यायपालिका, कॉर्पोरेट रोजगार तथा अपनी मूल व्याकरणिक व सांस्कृतिक स्वायत्तता को बनाए रखने के लिए निरंतर संघर्षरत है। इसके अतिरिक्त, बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के दबाव में विशुद्ध हिंदी के स्थान पर 'हिंग्लिश' (Hinglish) के बढ़ते प्रचलन ने इसकी व्याकरणिक शुद्धता, समृद्ध शब्दावली और लाक्षणिक सौंदर्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। यह शोध पत्र 21वीं सदी में हिंदी भाषा के इस आत्मसंघर्ष के बहुआयामी स्वरूप को गहराई से रेखांकित करता है। इस अध्ययन में स्पष्ट शोध उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है, जिसके अंतर्गत भूमंडलीकरण व डिजिटल क्रांति के प्रभाव, ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में उपस्थित चुनौतियों तथा इसके भावी विकास की रणनीतियों का अनुशीलन शामिल है। शोध पत्र में विषय से संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययनों की साहित्य समीक्षा (Review of Literature) तथा शोध-रिक्ति (Research Gap) को दर्शाया गया है, और विश्लेषणात्मक

व गुणात्मक शोध विधि (Research Methodology) का प्रयोग किया गया है। अंतिम चरण में, यह पत्र हिंदी को केवल मनोरंजन या बाज़ार की भाषा तक सीमित न रखकर इसे नई शिक्षा नीति (NEP 2020), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), रोजगारपरकता और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय के माध्यम से एक सक्षम 'ज्ञान-भाषा' (Knowledge Language) के रूप में पुनर्रचित करने हेतु व्यावहारिक दिशाएँ एवं सुझाव प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: हिंदी का आत्मसंघर्ष, भूमंडलीकरण, हिंग्लिश, ज्ञान-भाषा, डिजिटल क्रांति

1. प्रस्तावना

भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह किसी समाज की संस्कृति, अस्मिता, इतिहास और वैचारिक बुनावट का जीवंत वाहक होती है। 21वीं सदी के वैश्विक परिदृश्य में प्रवेश करते ही हिंदी भाषा के सामने व्यापक प्रसार और संभावनाओं के अभूतपूर्व द्वार खुले हैं, किंतु इसके साथ ही इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई स्वरूप में आंतरिक तथा बाह्य स्तर पर कई गंभीर अंतर्विरोध भी उभरे हैं। आज हिंदी का मुख्य संघर्ष केवल अपनी उपस्थिति या संप्रेषणीयता दर्ज कराने का नहीं रह गया है, बल्कि स्वयं को ज्ञान-विज्ञान, उच्च शोध, आधुनिक तकनीक, न्यायपालिका और अर्थशास्त्र की एक आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करने का है। इसी चुनौतीपूर्ण स्थिति को हिंदी का 'आत्मसंघर्ष' कहा गया है, जहाँ यह भाषा एक ओर अपने शास्त्रीय व पारंपरिक रूप तथा समृद्ध भाषाई विरासत को बचाने का प्रयास कर रही है, तो दूसरी ओर भूमंडलीकरण, बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के दबावों को झेलते हुए अपने अस्तित्व और प्रासंगिकता की रक्षा कर रही है। इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य 21वीं सदी में हिंदी के इसी बहुआयामी आत्मसंघर्ष का विस्तार से अनुशीलन करना है। शोध का प्रथम उद्देश्य भूमंडलीकरण, बाजारवाद और डिजिटल क्रांति के प्रभाव में हिंदी भाषा में आए सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संरचनात्मक बदलावों का सूक्ष्म विश्लेषण करना है। इस क्रम में विज्ञापनों, मनोरंजन उद्योग, सिनेमा और सोशल मीडिया में तेज़ी से बढ़ते 'हिंग्लिश' (Hinglish) के प्रभाव, व्याकरणिक शिथिलता तथा भाषाई शुद्धता पर पड़ते दुष्परिणामों को रेखांकित करना है। शोध का दूसरा प्रमुख उद्देश्य ज्ञान-विज्ञान और तकनीक की भाषा के रूप में हिंदी के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और बाधाओं की पहचान करना है। इसके अंतर्गत उच्च शिक्षा, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, विधिक व्यवस्था, मौलिक अनुसंधान तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) व नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) जैसे आधुनिक डिजिटल क्षेत्रों में मानक पाठ्यसामग्री और तकनीकी शब्दावली के अभाव का मूल्यांकन करना शामिल है। शोध का तीसरा उद्देश्य हिंदी को केवल लोक-व्यवहार या बाज़ार की भाषा तक सीमित न रखकर इसे एक सक्षम 'ज्ञान-भाषा' (Knowledge Language) और

रोजगारपरक माध्यम के रूप में विकसित करने हेतु व्यावहारिक रणनीतियाँ व नीतिगत सुझाव प्रस्तावित करना है।

2. शोध के उद्देश्य

1. **हिंदी के आत्मसंघर्ष के स्वरूप का विश्लेषण करना:** 21वीं सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद और डिजिटल क्रांति के प्रभाव में हिंदी भाषा में आए सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई बदलावों तथा हिंग्लिश (Hinglish) के प्रभाव को रेखांकित करना।
2. **ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीक की भाषा के रूप में चुनौतियों की पहचान करना:** उच्च शिक्षा, शोध, रोजगार, न्यायपालिका और एआई (AI) एवं डिजिटल तकनीक के क्षेत्र में हिंदी के समक्ष उपस्थित बाधाओं का मूल्यांकन करना।
3. **भावी दिशाओं एवं रणनीतियों का निर्धारण करना:** हिंदी को केवल बोलचाल की भाषा न बनाकर एक सक्षम 'ज्ञान-भाषा' (Knowledge Language) और रोजगारपरक भाषा के रूप में स्थापित करने हेतु व्यावहारिक सुझाव व नीतियाँ प्रस्तावित करना।

3. साहित्य समीक्षा

हिंदी भाषा के स्वरूप, स्थिति और इसके समक्ष उपस्थित विविध चुनौतियों पर समय-समय पर मूर्धन्य भाषाविदों, समाजशास्त्रियों और साहित्यकारों ने गहन चिंतन प्रस्तुत किया है। **रामविलास शर्मा (1978)** ने अपनी कृति भारत की भाषा समस्या में हिंदी के राष्ट्रीय और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करते हुए औपनिवेशिक मानसिकता तथा अंग्रेजी के अनधिकृत वर्चस्व को हिंदी के स्वाभाविक विकास में सबसे बड़ी बाधा स्वीकार किया है; उनका स्पष्ट मत था कि जब तक भाषा जनसाधारण के अधिकारों और सुलभ न्याय की भाषा नहीं बनती, तब तक उसका पूर्ण विकास संभव नहीं है। वहीं **सुधीश पचौरी (2000)** ने जनसंचार और हिंदी में भूमंडलीकरण तथा मीडिया के आधुनिक दौर में हिंदी के बदलते स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए यह तर्क दिया कि बाज़ार और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने हिंदी का प्रचार-प्रसार तो व्यापक स्तर पर किया है, किंतु इसे केवल एक 'उपभोक्तावादी' और 'बाज़ार-संचालित' माध्यम बनाकर इसकी व्याकरणिक शुद्धता एवं संवेदनशीलता को गहरा आघात पहुँचाया है। **नामवर सिंह (2004)** ने साहित्य और समाज में हिंदी के 'आत्मसंघर्ष' को उसकी आंतरिक जीवंतता और प्रतिरोध-शक्ति का प्रतीक माना है; उनके अनुसार हिंदी का वास्तविक संघर्ष किसी अन्य भारतीय क्षेत्रीय भाषा से न होकर उस प्रभुत्वशाली औपनिवेशिक व्यवस्था से है जो ज्ञान, निर्णय और सत्ता की प्राथमिक भाषा के रूप में अंग्रेजी को तरजीह देती है। इसके अतिरिक्त **अशोक वाजपेयी (2008)** ने कविता का समय में 21वीं सदी में हिंदी के सम्मुख उभरते 'हिंग्लिश' तथा बहुसांस्कृतिक

दबावों से उत्पन्न संकट पर ध्यान केंद्रित करते हुए यह प्रतिपादित किया कि भाषा की मौलिक चेतना, उसकी लाक्षणिकता और साहित्यिक लालित्य को अक्षुण्ण बनाए रखना समकालीन समय की सबसे गंभीर चुनौती है। पूर्ववर्ती अध्ययनों और समीक्षाओं में मुख्यतः साहित्य, पारंपरिक मीडिया, औपनिवेशिक प्रभावों अथवा सामाजिक भूमिकाओं पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया गया है। वर्तमान शोध 21वीं सदी के तीव्र **डिजिटल युग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), सोशल मीडिया और नई शिक्षा नीति (NEP 2020)** के नव-उद्भूत परिदृश्य के संदर्भ में हिंदी के 'आत्मसंघर्ष' का एक सर्वथा नए और व्यावहारिक धरातल पर पुनर्मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

4. शोध विधि

इस शोध पत्र की प्रकृति **गुणात्मक (Qualitative)** और **विश्लेषणात्मक (Analytical)** है। शोध प्रश्न के विस्तृत अध्ययन हेतु निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया है:

- **द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन (Secondary Data Analysis):** मानक पुस्तकों, प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, सरकारी रिपोर्टों (जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) और भाषा आयोग के दस्तावेजों का गहन अध्ययन।
- **तुलनात्मक और आलोचनात्मक विश्लेषण (Comparative & Critical Analysis):** भूमंडलीकरण से पूर्व की हिंदी और 21वीं सदी की डिजिटल हिंदी के सामाजिक, आर्थिक व तकनीकी प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
- **विषय-वस्तु विश्लेषण (Content Analysis):** सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्मों और विज्ञापनों में प्रयुक्त हो रही 'हिंग्लिश' तथा हिंदी के भाषा रूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

5. हिंदी भाषा का आत्मसंघर्ष

21वीं सदी के बदलते वैश्विक परिदृश्य में हिंदी भाषा का आत्मसंघर्ष केवल एक भाषाई प्रश्न नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, अस्मिता, अधिकार और तकनीक के धरातल पर छिड़ा एक जटिल और बहुआयामी संघर्ष है। इस दौर में हिंदी जहाँ एक ओर विश्व स्तर पर अपनी जनसांख्यिकीय शक्ति का प्रदर्शन कर रही है, वहीं दूसरी ओर अपनी संरचनात्मक स्वायत्तता और ज्ञान-भाषा बनने की क्षमता को बचाए रखने के लिए निरंतर जूझ रही है। 21वीं सदी में हिंदी के इस 'आत्मसंघर्ष' के स्वरूप को मुख्यतः तीन प्रमुख आयामों में गहराई से विश्लेषित किया जा सकता है:

(क) पहचान और प्रभुत्व का संघर्ष

हिंदी का पहला और सबसे गहरा आत्मसंघर्ष उसकी विशाल जनसांख्यिकीय उपस्थिति तथा वास्तविक प्रशासनिक व अकादमिक प्रभाव के बीच बने गहरे अंतर में निहित है।

- **जनसंख्या बनाम वास्तविक प्रभाव:** बोलचाल, लोक-संस्कृति, जनसंचार और जनसामान्य के व्यावहारिक धरातल पर हिंदी का दायरा अत्यंत विशाल और वैश्विक है। भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के अनेक देशों में हिंदीभाषियों की संख्या करोड़ों में है। इसके बावजूद, देश की उच्च नीति-निर्धारण संस्थाओं, उच्च न्यायालयों, कॉर्पोरेट नीतियों, मौलिक वैज्ञानिक अनुसंधान और उच्च शिक्षा के प्रमुख संस्थानों में आज भी अंग्रेजी भाषा का एकछत्र वर्चस्व स्थापित है। हिंदी केवल एक 'जनसंख्यात्मक विशालता' की भाषा बनकर रह गई है, जिसे निर्णय लेने वाली शीर्ष संस्थाओं में वह अधिकार और प्रभुत्व हासिल नहीं हो सका है जिसकी वह हकदार है।

- **हीनभावना की ग्रंथि (Inferiority Complex):** भारतीय समाज की सबसे बड़ी आंतरिक विडंबना यह है कि सदियों की औपनिवेशिक दासता के कारण आज भी समाज में मानसिक गुलामी कायम है। अंग्रेजी बोलने और लिखने को 'श्रेष्ठता', 'आधुनिकता' और 'उच्च सामाजिक वर्ग' का प्रतीक मान लिया गया है, जबकि हिंदी को केवल 'भावनात्मक अभिव्यक्ति', 'मनोरंजन' या 'घरेलू संवाद' की सीमित परिधि में धकेल दिया गया है। यह भाषाई हीनभावना हिंदी के स्वाभाविक और गरिमामय विकास में सबसे बड़ी बाधक बनी हुई है।

(ख) बाजारीकरण और 'हिंग्लिश' का संकट

21वीं सदी में उदारीकरण और भूमंडलीकरण की नीतियों ने भाषा को एक बाजारी वस्तु में बदल दिया है। यहाँ हिंदी का आत्मसंघर्ष अपनी भाषाई शुद्धता और बाजारी उपयोगिता के बीच है।

- **उपभोक्तावादी भाषा में रूपांतरण:** इसमें संदेह नहीं कि वैश्विक बाज़ार ने अपने व्यावसायिक लाभ और व्यापक उपभोक्ता वर्ग तक पहुँचने के लिए हिंदी को अपनाया है। विज्ञापनों, लोकप्रिय सिनेमा, टीवी धारावाहिकों, समाचार चैनलों और नए दौर के ओटीटी (OTT) प्लेटफॉर्मों पर हिंदी की पहुँच अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। परंतु, बाज़ार ने हिंदी को एक समृद्ध साहित्यिक और गंभीर चिंतनशील भाषा के रूप में न अपनाकर, उसे केवल एक 'उपभोक्तावादी और बिक्री-पसंद भाषा' (Consumerist Language) बनाकर छोड़ दिया है।

- **'हिंग्लिश' का बढ़ता प्रभाव और क्षरण:** बाजारीकरण की इसी होड़ में विशुद्ध, समृद्ध और मानक हिंदी के स्थान पर 'हिंग्लिश' (Hinglish - हिंदी और अंग्रेजी का विकृत मिश्रण) को एक फैशन और सहूलियत की भाषा के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप हिंदी की मूल व्याकरणिक संरचना, उसकी तत्सम व तद्भव शब्दावली का विशाल भंडार, लाक्षणिकता और पारंपरिक मुहावरेदार सौंदर्य तेज़ी से क्षीण हो रहा है। यह स्थिति हिंदी की मूल पहचान को लुप्त करने का एक गंभीर खतरा पैदा करती है।

(ग) डिजिटल विस्तार बनाम गुणवत्तात्मक ज्ञान सृजन

सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के इस युग में हिंदी का आत्मसंघर्ष अपनी 'मात्रा' और 'गुणवत्ता' के बीच संतुलन साधने का है।

- **डिजिटल सामग्री का परिमाण (Quantity):** डिजिटल क्रांति और स्मार्टफोन की सुलभता ने हिंदी कंटेंट के परिमाण में ऐतिहासिक उछाल लाया है। ब्लॉग, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, विकिपीडिया और विभिन्न ई-पोर्टल्स पर हिंदी में लिखने और सामग्री देखने वालों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है। AI और वॉइस-टू-टेक्स्ट तकनीकों ने हिंदी टाइपिंग और कंटेंट निर्माण को अत्यधिक सुलभ बना दिया है।

- **उच्च स्तरीय गुणवत्ता (Quality) का अभाव:** मात्रात्मक वृद्धि के बावजूद, डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर ज्ञान-विज्ञान, मौलिक शोध, तकनीकी प्रगति, दर्शन, विधि और गंभीर वैचारिक सामग्री का घोर अभाव है। इंटरनेट पर उपलब्ध अधिकांश हिंदी सामग्री सतही मनोरंजन, सनसनीखेज समाचार या अनुवादित सूचनाओं तक सीमित है। उच्च शोध-पत्रों, प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथों और वैज्ञानिक डेटाबेस के मामले में डिजिटल दुनिया में हिंदी आज भी अंग्रेजी के मुकाबले बेहद पिछड़ी हुई स्थिति में है।

21वीं सदी में हिंदी का आत्मसंघर्ष एक ऐसी दोहरी राह पर खड़ा है जहाँ उसे बाज़ार और तकनीक के दबावों को झेलते हुए भी अपनी अंतरात्मा, मौलिक सौंदर्य और एक प्रामाणिक 'ज्ञान-भाषा' बनने के अपने संकल्प को बनाए रखना है।

6. प्रमुख चुनौतियाँ

21वीं सदी में हिंदी भाषा के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों को निम्नलिखित विस्तृत शीर्षकों के अंतर्गत विश्लेषित किया जा सकता है:

1. उच्च शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में चुनौतियाँ

चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी (Engineering), विधि (Law), सूचना प्रौद्योगिकी और उच्च वैज्ञानिक विषयों में मानक हिंदी पाठ्यपुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों और मौलिक शोध-पत्रों की भारी कमी है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर आज भी अधिकांश उच्च स्तरीय अकादमिक सामग्री केवल अंग्रेजी में उपलब्ध है। इसके परिणामस्वरूप, हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों को उच्च शोध एवं ज्ञान-सृजन के स्तर पर गंभीर कठिनाइयों और वंचना का सामना करना पड़ता है।

2. रोजगार एवं अर्थव्यवस्था से जुड़ाव की चुनौती

वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था और कॉर्पोरेट जगत में हिंदी को वह स्थान नहीं मिल पाया है जो किसी देश की मुख्य भाषा को मिलना चाहिए। बैंकिंग, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सूचना प्रौद्योगिकी (IT Sector) और उच्च व्यावसायिक सेवाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता बनी हुई है। उच्च आय वाले क्षेत्रों में हिंदी का सीधा

जुड़ाव न होने के कारण यह केवल निचले स्तर की सेवा-अर्थव्यवस्था या मनोरंजन उद्योग तक सीमित रह जाती है, जिससे युवाओं के बीच रोजगार के लिए अंग्रेजी की ओर रुझान बढ़ता है।

3. तकनीक एवं मानक शब्दावली की समस्या

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित मानक शब्दावली अत्यंत क्लिष्ट, अप्रचलित और संस्कृतनिष्ठ होने के कारण आम जनमानस और तकनीकी विशेषज्ञों के लिए व्यावहारिक सिद्ध नहीं हो पाती। 'कंप्यूटर', 'सॉफ्टवेयर', 'इंटरनेट' जैसे रोजमर्रा के शब्दों के लिए तैयार किए गए जटिल हिंदी पर्याय भाषा को सहज बनाने के बजाय और अधिक बोझिल कर देते हैं। इससे तकनीकी विकास के साथ हिंदी का सहज समन्वय स्थापित होने में बाधा उत्पन्न होती है।

4. नीतिगत क्रियान्वयन का अभाव

यद्यपि नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक मातृभाषा और भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाने तथा त्रि-भाषा सूत्र पर विशेष बल दिया गया है, किंतु जमीनी स्तर पर इसका पूर्ण क्रियान्वयन अभी भी एक चुनौती है। इसके अतिरिक्त, प्रशासनिक कामकाज, संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की परीक्षाओं, उच्च न्यायालयों तथा सर्वोच्च न्यायालय की न्यायिक कार्यवाही में आज भी अंग्रेजी का ही वर्चस्व बना हुआ है।

5. सांस्कृतिक और भाषाई क्षरण की स्थिति

डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव, सोशल मीडिया की रील्स-संस्कृति और हिंग्लिश के अंधाधुंध प्रयोग के कारण युवा पीढ़ी मौलिक हिंदी साहित्य, शास्त्रीय पठन-पाठन और भाषा की व्याकरणिक शुद्धता से दूर होती जा रही है। हिंदी की समृद्ध साहित्यिक विरासत जैसे प्रेमचंद, प्रसाद, निराला और रेणु की रचनाएँ आधुनिक पठन-संस्कृति से कट रही हैं, जिससे भाषा के भाव-सौंदर्य, समृद्ध मुहावरों और लाक्षणिकता का गंभीर क्षरण हो रहा है।

7. नई संभावनाएँ एवं दिशाएँ

21वीं सदी के उत्तरार्ध में यदि हिंदी को अपने इस ऐतिहासिक आत्मसंघर्ष से विजय प्राप्त कर स्वयं को एक समर्थ, वैश्विक और आधुनिक 'ज्ञान-भाषा' (Knowledge Language) के रूप में स्थापित करना है, तो उसे पारंपारिक और जड़ चौखटों से बाहर निकलकर व्यावहारिक, तकनीकी और बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना होगा। भविष्य की इस विकास यात्रा हेतु प्रमुख दिशाओं एवं संभावनाओं का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है:

1. डिजिटल एवं एआई क्रांति के साथ एकीकरण

सूचना प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के इस दौर में भाषा की ताकत उसके डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र (Digital Ecosystem) की मजबूती से तय होती है। हिंदी को तकनीक के इस नए दौर में अग्रणी बनाने हेतु दो मुख्य मोर्चों पर कार्य करना अनिवार्य है:

- **नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) और एआई का संवर्धन:**

हिंदी में 'नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग' (NLP), मशीन लर्निंग और वॉइस-टू-टेक्स्ट (Voice-to-Text) तथा टेक्स्ट-टू-वॉइस तकनीकों का दायरा अत्यधिक व्यापक और सटीक बनाना होगा। बड़े भाषाई मॉडलों (Large Language Models - LLMs) को हिंदी के विशाल साहित्य, व्याकरणिक नियमों और विविध क्षेत्रीय बोलियों के डेटा पर प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि हिंदीभाषी उपयोगकर्ता एआई टूल, सर्च इंजन और वॉयस असिस्टेंट्स (जैसे एलेक्सा, सिरी आदि) से अपनी मातृभाषा में सहजता और प्रामाणिकता के साथ संवाद कर सकें।

- **ओपन-सोर्स सामग्री एवं ज्ञान-भंडार का निर्माण:**

डिजिटल दुनिया में गुणवत्तापूर्ण ज्ञान-सामग्री (Quality Knowledge Content) की कमी को दूर करने के लिए विकिपीडिया, ई-लाइब्रेरी, ऑनलाइन शोध पोर्टलों और ओपन-एक्सेस पत्रिकाओं का एक विशाल नेटवर्क तैयार करना होगा। उच्च स्तरीय विज्ञान, विधि, दर्शन, चिकित्सा और समाजशास्त्र से जुड़े मौलिक शोध-पत्रों एवं संदर्भ ग्रंथों को डिजिटल प्रारूप में निशुल्क उपलब्ध कराना होगा, जिससे शोधार्थियों और विद्यार्थियों को हिंदी में प्रामाणिक सामग्री हेतु अंग्रेजी पर निर्भर न रहना पड़े।

2. रोजगार और अर्थव्यवस्था के साथ जीवंत जुड़ाव

कोई भी भाषा केवल भावनात्मक अपीलों या सरकारी संरक्षण के बल पर जीवित और समृद्ध नहीं रह सकती; उसका सीधा संबंध आजीविका और अर्थशास्त्र से होना अनिवार्य है।

- **नए व्यावसायिक क्षेत्रों में हिंदी का विस्तार:**

हिंदी को केवल मनोरंजन, लोक-संस्कृति या विज्ञापनों तक सीमित न रखकर इसे आधुनिक अर्थव्यवस्था के उच्च-आय वाले क्षेत्रों का अभिन्न अंग बनाना होगा। इसके लिए तकनीकी लेखन (Technical Writing), डेटा एनालिसिस, डिजिटल कंटेंट क्रिएशन, ई-कॉमर्स, डिजिटल मार्केटिंग और आईटी सपोर्ट जैसे उभरते क्षेत्रों में हिंदी माध्यम को व्यावसायिक दक्षता के साथ प्रयुक्त करने के अवसर पैदा करने होंगे।

- **द्विभाषिक (Bilingual) कॉर्पोरेट संस्कृति को प्रोत्साहन**

कॉर्पोरेट जगत, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और निजी सेवा क्षेत्र में एक सहज द्विभाषिक संस्कृति को संस्थागत रूप से बढ़ावा देना होगा। जब तक कॉर्पोरेट वातावरण में हिंदी बोलने और लिखने वालों को हीन भावना से मुक्त रखकर उनकी भाषाई दक्षता का सम्मान नहीं किया जाएगा और व्यावसायिक पत्राचार व प्रस्तुतियों (Presentations) में हिंदी का स्वाभाविक समावेश नहीं होगा, तब तक आर्थिक स्तर पर हिंदी का वर्चस्व स्थापित होना कठिन है।

3. व्यावहारिक एवं जीवंत शब्दावली की स्वीकार्यता

भाषा एक बहती हुई नदी के समान होती है, जो नए शब्दों को आत्मसात करके ही सजीव और गतिशील बनी रह सकती है। अत्यधिक क्लिष्टता भाषा के विकास को अवरुद्ध कर देती है।

- **सहजता और लोक-स्वीकार्यता पर बल:**

तकनीकी और प्रशासनिक कार्यों के लिए अत्यधिक क्लिष्ट, अप्रचलित और दूररूह संस्कृतनिष्ठ शब्दों को थोपने के स्थान पर भाषा में सरलता और सहजता को प्राथमिकता देनी होगी। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग को ऐसे शब्दों का निर्माण करना चाहिए जो आम जनमानस की समझ के करीब हों।

- **आधुनिक व विदेशी शब्दावली का समावेश:**

जो शब्द आम बोलचाल, तकनीक और दैनिक जीवन में रच-बस गए हैं (जैसे- कंप्यूटर, मोबाइल, बस, डॉक्टर, ट्रेन, सॉफ्टवेयर आदि), उन्हें बिना किसी पूर्वाग्रह के हिंदी के अपने व्याकरणिक ढांचे में अपना लेना चाहिए। इसके अलावा, भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं के सुगम शब्दों को पचाकर ही हिंदी अपनी अभिव्यक्ति क्षमता को अधिक समृद्ध और सर्वग्राह्य बना सकती है।

4. अन्य भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय एवं सहकार

हिंदी का आत्मसंघर्ष भारत की अपनी ही किसी क्षेत्रीय या प्रांतीय भाषा के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह संघर्ष उस औपनिवेशिक व्यवस्था और अंग्रेजी के उस एकाधिकारवादी वर्चस्व के विरुद्ध है जो भारतीय भाषाओं को द्वितीयक मानती है।

- **'भाषा-सहयोग' की नीति और अनुवाद क्रांति:**

हिंदी को भारत की अन्य समृद्ध भाषाओं जैसे तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, मराठी, उड़िया आदि के साथ प्रतिस्पर्धा के बजाय 'सहोदरता' और 'भाषा-सहयोग' का संबंध स्थापित करना होगा। इसके लिए अनुवाद (Translation Technology & Literature) का एक राष्ट्रीय आंदोलन खड़ा करना होगा।

• सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आदान-प्रदान:

अन्य भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य, ज्ञान-परंपराओं और शोधों का हिंदी में तथा हिंदी की श्रेष्ठ रचनाओं का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद का दायरा बढ़ाना होगा। जब हिंदी भारत की सभी भाषाओं की प्रतिनिधि और सहयोगी भाषा बनकर उभरेगी, तब वह अंग्रेजी के वर्चस्व को चुनौती देने में पूर्णतः सक्षम हो सकेगी।

8. निष्कर्ष

21वीं सदी के उत्तरार्ध में हिंदी भाषा का आत्मसंघर्ष केवल एक भाषा के अस्तित्व, शब्दों की शुद्धता या साहित्य तक सीमित परिधि की लड़ाई नहीं है। यह वस्तुतः भारत की सांस्कृतिक स्वायत्तता, बौद्धिक स्वतंत्रता और जन-सामान्य के वास्तविक लोकतांत्रिक अधिकारों का एक दूरगामी एवं निर्णायक संघर्ष है। किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र में लोकतंत्र की वास्तविक सार्थकता तभी सिद्ध हो सकती है, जब ज्ञान, विज्ञान, प्रशासन और न्यायपालिका की भाषा वही हो, जिसे देश का विशाल बहुसंख्यक समाज सहजता से समझता और प्रयोग करता है। जब तक ज्ञान और सत्ता की प्राथमिक कुंजी औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रस्त किसी विदेशी भाषा के हाथों में बंधक रहेगी, तब तक आम जनमानस अपने मौलिक अधिकारों और विकास की मुख्यधारा से पूर्णतः लाभान्वित नहीं हो सकेगा।

हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विलक्षणता और शक्ति उसकी अद्भुत लचीली प्रकृति तथा समन्वयवादी क्षमता में निहित है। उसमें यह अद्वितीय सामर्थ्य विद्यमान है कि वह प्राचीन भारतीय ज्ञान-परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक सोच के मध्य एक अटूट सेतु का निर्माण कर सकती है। वह अपनी शास्त्रीय जड़ों और ऐतिहासिक विरासत को अक्षुण्ण रखते हुए भी आधुनिकता, भूमंडलीकरण और डिजिटल युग की नई माँगों को आत्मसात करने में पूरी तरह सक्षम है।

यदि हिंदी को आने वाले दशकों में विश्व मंच पर एक सशक्त, प्रामाणिक और प्रभावकारी 'ज्ञान-भाषा' (Knowledge Language) के रूप में स्थापित होना है, तो उसे निष्प्रभावी सरकारी संरक्षण, केवल राजभाषा दिवस मनाने के औपचारिक आयोजनों और भावात्मक नारों पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति का सर्वथा त्याग करना होगा। इसके स्थान पर हिंदी को देश की मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था, बहुराष्ट्रीय कॉर्पोरेट रोजगार, उच्च वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तथा समाज-सापेक्ष चिंतन का मुख्य व्यावहारिक माध्यम बनाना होगा।

जब तक हिंदी भाषी युवा अपनी भाषा के बल पर उच्च रोजगार, आर्थिक आत्मनिर्भरता और वैश्विक पहचान प्राप्त करने में सफल नहीं होंगे, तब तक इसका वास्तविक उत्थान संभव नहीं है। अतः 21वीं सदी का यह वर्तमान दौर हिंदी के पतन या संकट का कालखंड नहीं है, बल्कि यह उसके

पुनर्मूल्यांकन, नया आकार लेने और पुनराविष्कार (Reinvention) का एक ऐतिहासिक संधि-स्थल है। यदि हम तकनीक, शिक्षा, अर्थशास्त्र और समन्वय की सही दिशा में निरंतर प्रयास जारी रखें, तो यह आत्मसंघर्ष हिंदी को एक सर्वसमावेशी, समर्थ और विश्वस्तरीय ज्ञान-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में मील का पत्थर साबित होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. वाजपेयी, अशोक (2008). कविता का समय. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. शर्मा, डॉ. रामविलास (1978). भारत की भाषा समस्या. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. सिंह, डॉ. नामवर (2004). साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
4. पचौरी, डॉ. सुधीश (2000). जनसंचार और हिंदी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
5. नेगी, बलदेव (2015). भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी. नई दिल्ली: स्वराज्य प्रकाशन.
6. भारत सरकार (शिक्षा मंत्रालय) (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय.
7. पंत, सुमित्रानंदन (2012). भाषा और साहित्य का भविष्य. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
8. भाटिया, डॉ. कैलाशचंद्र (2010). प्रयोजनमूलक हिंदी: सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन.
9. मिश्र, डॉ. विद्यानिवास (2002). हिंदी की पहचान. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
10. तिवारी, डॉ. भोलानाथ (2018). हिंदी भाषा की सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन.
11. जोशी, मनोहर श्याम (2006). 21वीं सदी और हिंदी मीडिया. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
12. शर्मा, डॉ. कृष्ण कुमार (2019). सूचना प्रौद्योगिकी, एआई और हिंदी का भविष्य. नई दिल्ली: नमन प्रकाशन.
13. वर्मा, डॉ. धनंजय (2014). आधुनिकता, बाजार और हिंदी भाषा. नई दिल्ली: अनामय पब्लिशर्स.
14. मिश्र, डॉ. कामेश्वर (2021). डिजिटल युग में हिंदी: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
15. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (2022). मानक तकनीकी शब्दावली का अनुप्रयोग और प्रासंगिकता. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
16. कुमार, डॉ. रवींद्र (2023). वैश्विक परिदृश्य में हिंदी: बाजार, तकनीक और अस्मिता. नई दिल्ली: भावना प्रकाशन.